केवल निजी वितरण के लिए

भाग ४, अंक ३ मई २०११

श्री राम चंद्र मिशन®

India ECHOES
ONE WORLD ONE HUMANITY

पंजाब का दौरा

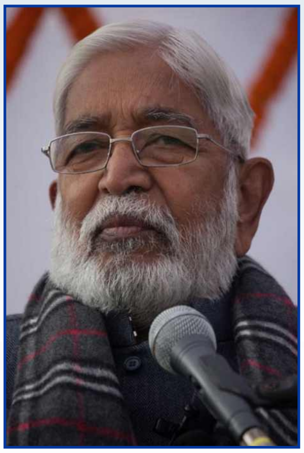

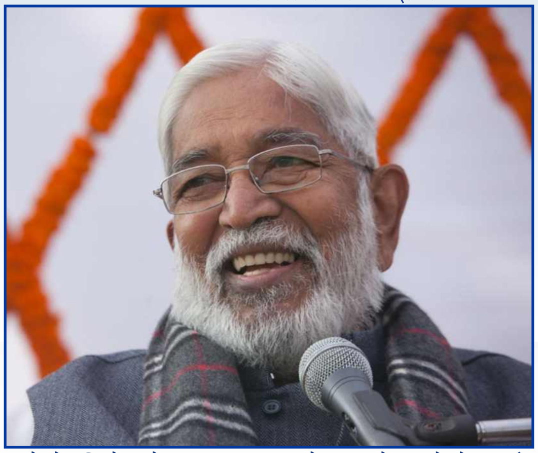

चंडीगढ़

२७ फरवरी को गुरूदेव ने दिल्ली से अपनी सड़क यात्रा आरम्भ की। रास्ते में वे कर्नाल में थोड़ी देर के लिये रुके, वहाँ उत्सुक अभ्यासियों के एक समूह ने उनका स्वागत किया। चंडीगढ़ पहुँचने पर १०० से भी ज्यादा अभ्यासियों और बच्चों ने उनका स्वागत किया। यद्दपि गुरुदेव ६ घंटे की कार यात्रा के बाद वहाँ पहुँचे थे, फिर भी उन्होंने एक अभ्यासी भाई के घर का उद्घाटन किया और सत्संग भी कराया।

२८ फरवरी और अगले दिन सुबह गुरुदेव बाहर आये और उन्होंने अभ्यासियों के साथ लगभग एक घंटा बिताया और उनके प्रश्नों के उत्तर भी दिये। यह एक हँसी–मजाक से भरपूर वार्तालाप था, जिसमें गुरुदेव ने अपने चिरपरिचित अन्दाज़ और हाज़िरजवाबी से हर किसी को हँसने के लिये मजबूर कर दिया।

लुधियाना

१ मार्च को लुधियाना पहुँचने के बाद गुरुदेव ने अभ्यासियों के साथ बातचीत की और सत्संग कराया। अगले दिन लुधियाना में प्रस्तावित आश्रम स्थल पर सत्संग कराने के बाद उन्होंने शिलान्यास किया। उसके बाद उन्होंने पंजाब की धरती के लिये अपने स्नेह को दर्शाते हुये एक वार्ता दी और पंजाबी भाषा में भी कुछ शब्द बोले। उन्होंने कहा कि जो लोग आश्रम नही आते हैं, उनके लिये वे कहेंगे," तुस्सी बेवकूफ"(तुम मूर्ख हो) और साथ ही कहा,"नाल आजा"(मेरे साथ आओ)। कुछ बातें जो गुरुदेव ने कही:

- ✍ अभ्यासियों को आत्म–अवलोकन करना चाहिए कि मालिक बार–बार क्यों आते हैं, इसका क्या उद्देश्य है?
- ✍ नये रास्ते पर चलने के लिये हमें पहला रास्ता छोड़ना होगा। मैं तैरता हूँ, तो मैं सूखा नही रह सकता; मैं उड़ता हूँ,तो मैं जमीन पर खड़ा नही रह सकता। एक नयी स्थिति में आने के लिये हमें पहली स्थिति को छोड़ना ही पड़ेगा।
- ✍ धर्म में भगवान नही है और यही सत्य है।
- ✍ दूसरों के लिये प्रार्थना करना स्वीकार्य है पर अपने लिये प्रार्थना करना , भीख माँगना है।

इसके पश्चात गुरुदेव दोपहर के भोजन के लिये चंडीगढ़ वापस चले गये।

चंडीगढ़

३ मार्च को गुरुदेव ने टैगोर थियेटर में सत्संग कराया, वहाँ पर समस्त ज़ोन से ६०० से भी ज्यादा अभ्यासी एकत्रित हुये थे। वे अपने प्रिय गुरुदेव का साथ पाकर खुशी से फूले नही समा रहे थे। भाई सतबीर और भाई हरभजन सिंह ने छोटी–छोटी वार्तायें दीं और उसके बाद भाई गुरप्रीत ने दिल को छू लेने वाले कुछ भजन प्रस्तुत किये। अगले दिन गुरुदेव की प्रतीक्षा में बैठे अभ्यासियों की खुशी का ठिकाना नही रहा, जब गुरुदेव बाहर आकर धूप में उनके साथ करीब एक घंटे तक बैठे रहे और उनके कई प्रश्नों के उत्तर दिये। शाम के समय भी गुरुदेव बाहर आये और सत्संग कराया।

५ मार्च को सुबह के नाश्ते के बाद शीघ्र ही गुरुदेव ने दिल्ली के लिये प्रस्थान किया, अभ्यासियों के एक बड़े समूह ने उनको इस आशा के साथ भावभीनी विदाई दी कि गुरुदेव जल्दी ही दुबारा वहाँ वापस आयेंगे। गुरुदेव कर्नाल में कुछ देर रुके और उन्होंने वहाँ सत्संग कराया। उसके बाद वे दिल्ली चले गये।

यात्रा के दौरान गुरुदेव के कहे हुये कुछ अनमोल रत्न:

- अतृप्त इच्छाओं से क्रोध उत्पन्न होता है; यह मन को ढक लेता है और सोचने की प्रक्रिया को रोक देता है, जिससे कि व्यक्ति अपने ही विनाश की ओर अग्रसर हो जाता है।
- प्रसन्नता मन की आन्तरिक स्थिति है, जिसका बाहरी संसार से कोई लेना देना नही है।
- विश्वास मन को खोलता है और पूर्वाग्रह इसे बंद कर देता है।
- प्रेम एक तरफ़ा रास्ता है, जो कि हृदय से अनंत की ओर जाता है।
- वास्तविक विवाह, जीवन साथी की कई जन्मों में तलाश के प्रयास का परिणाम है।
- प्रेमपूर्वक किया गया प्रयास सभी समस्याओं को हल कर देता है।
- यह पूछने पर कि इच्छा शक्ति को प्रयोग में कैसे लायें, गुरुदेव ने कहा,"आप जब इसे प्रयोग में लाते हैं, केवल तभी आप अन्तर जान पायेंगे। यदि इच्छा शक्ति दृढ़ नही है, तो अभिलाषायें इसके ऊपर हावी हो जायेंगी। अनुशासन इच्छा शक्ति और अभिलाषाओं को संतुलित करता है। इच्छाशक्ति हृदय से आती है, मस्तिष्क से नहीं। हम हमेशा खतरे में रहते है, क्योंकि इच्छाशक्ति की कोई दिशा नही होती, सफ़ाई की प्रक्रिया इसे दिशा देती है।"

रायपुर

आुरुदेव शाम को ७ बजकर ४० मिनट पर रायपुर हवाई–अड्डे पर पहुँचे, वहाँ उत्साहित अभ्यासियों ने उनका स्वागत किया और वहाँ से वे नवनिर्मित

योगाश्रम चले गये। आश्रम पहुँचने पर गुरुदेव का स्वागत बहुत ही प्यार, अनुशासन और गरमजोशी के साथ किया गया। रात में लगभग १० बजे गुरुदेव अपने कार्यालय से बाहर आये और आधा घंटे तक अभ्यासियों के बीच बैठे रहे। ८ मार्च की सुबह गुरुदेव अस्थायी सत्संग भवन में आये और लगभग ८बजकर ३० मिनट पर सत्संग कराया। सत्संग के बाद उन्होंने गोल्फ–कार्ट में आश्रम का चक्कर लगाया और वहाँ हो चुके निर्माण कार्य को देखकर काफी प्रसन्न हुये।

९ मार्च का दिन छत्तीसगढ़ और आसपास के राज्यों से आये लगभग २००० अभ्यासियों के लिये बहुप्रतिक्षित दिन था, जब गुरुदेव ने स्मृति–प?िका का अनावरण करके सत्संग भवन का उदघाटन किया। वे इस ९६०० स्क्वायर फ़ीट में बने हुये सुन्दर सत्संग भवन को देखकर बहुत खुश हुये। इस सत्संग भवन के निर्माण में गुणवत्ता के साथ छोटी–छोटी बातों का भी ध्यान रखा गया है। सत्संग के बाद गुरुदेव ने कहा :

- सहज मार्ग अकेली ऐसी प्रकिया है, जो आध्यात्मिकता के बीज बोती है
- अभ्यासियों की संख्या गुणवत्ता के साथ बढ़नी चाहिये।
- सत्संग भवन का उपयोग केवल ध्यान के लिये ही होना चाहिये और लोगों को अपने धार्मिक रीति–रिवाज आश्रम के परिसर में नही करने चाहिये।

गुरुदेव केन्द्रीय रिजर्व पुलिस फोर्स के जवानों को वहाँ देखकर बहुत खुश हुये (लगभग १०० जवान मिशन में अभ्यासी बन गये है) और उन्होंने आशा व्यक्त की, कि भविष्य में अनेक बटालियन मिशन का हिस्सा बनेगी।

शाम के सत्संग के बाद बच्चों ने एक छोटा सा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत

खंड ४, अंक ३ मई २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

किया।

शाम के सत्संग के दौरान गुरुदेव अपनी कॉटेज के बाहर आकर बैठ गये और वहाँ उन्होंने लगभग ८० कार्यकर्ताओं के कार्य तो सराहते हुए उन्हे चाँदी के सिक्के वितरित किये। अस्वस्थ होने के बावजूद भी गुरुदेव प्रसन्न दिखायी दिये और उन्होंने अभ्यासियों के साथ समय व्यतीत किया।

१० मार्च को गुरुदेव ने सुबह का सत्संग ७ बजकर ५ मिनट पर आरम्भ किया (सत्संग का निर्धारित समय ७ बजकर ३० मिनट था)। सत्संग के पश्चात करीब १० बजे गुरुदेव ने एक अभ्यासी भाई के घर के लिये प्रस्थान किया और वहाँ से दोपहर १२ बजे हैदराबाद की उड़ान के लिये हवाईअड्डे की ओर चले गये।

हैदराबाद

गुरुदेव १० मार्च को करीब १ बजकर ४५ मिनट पर हैदराबाद हवाईअड्डे पर पहुँचे जहाँ प्रफुल्लित अभ्यासियों ने उनका स्वागत किया। हैदराबाद में ज़ोनल आश्रम जाने वाले रास्ते पर कुछ राजनीतिक प्रदर्शन के समाचार को जानकर गुरुदेव हवाईअड्डे के नज़दीक एक अभ्यासी के घर चले गये। कुछ देर विश्राम के पश्चात उन्होंने "कान्हा शान्तिवनम प्रयोजना" के विवरण का अध्ययन किया और उसके पश्चात वहाँ पर उपस्थित अभ्यासियों को सत्संग कराया।

अगले दिन भी गुरुदेव "कान्हा शान्तिवनम प्रयोजना" के पंजीकरण की प्रक्रिया के अवलोकन करने में काफी व्यस्त थे और वे इस बात से विशेषतः प्रसन्न थे कि प्रयोजना के पंजीकरण का प्रथम चरण योजनाबद्ध तरीके से जारी था।

१२ मार्च को गुरुदेव ज़ोनल आश्रम पहुंचे जहां कई हजार अभ्यासियों ने गुरुदेव के कार्यालय की ओर जाने वाले रास्ते के दोनो ओर पक्तिबद्ध खड़े होकर उनका स्वागत किया। गुरुदेव ने टिप्पणी की, "आश्चर्यजनक अनुशासन, देखकर कितना अच्छा लग रहा है।" वे नवनिर्मित ढलान पर चलते हुए अपनी कॉटेज में चले गये। उसके तुरन्त पश्चात वे अपने कार्यालय तथा गोष्ठीकक्ष को देखने के लिये गये। गुरुदेव ने सुबह और शाम का सत्संग कराया जिसमें ५००० से भी अधिक अभ्यासी सम्मिलित हुए। जब एक अभ्यासी ने टिप्पणी की, "गुरुदेव की दाढ़ी सुन्दर दिख रही है," तो गुरुदेव ने नट्खट अन्दाज़ में कहा, "दाढ़ी के पीछे का चेहरा और भी ज्यादा सुन्दर है।" गुरुदेव अपने प्रवास के दौरान प्रसन्नचित्त और स्वस्थ दिखायी दिये।

गुरुदेव के कॉटेज के दरवाज़े पूरे समय खुले रखे गये इससे अभ्यासियों के प्रतिक्षित ह्रदयों को, जो कि अपने प्रियतम की एक झलक पाने के लिये दूर– दराज़ के इलाकों से आये थे, काफी सान्तवना मिली। गुरुदेव कई बार अपने शयनकक्ष के बाहर खुले बरामदे में आकर बैठे जिससे अभ्यासियों को कई बार गुरुदेव की झलक पाने का अवसर मिला।

१३ मार्च को जब गुरुदेव सत्संग भवन की ओर जा रहे थे तभी रसोई मे काम करने वाले एक समूह ने उनका अभिवादन किया, गुरुदेव ने उनसे एक छोटा वार्तालाप किया और उन्हें याद दिलाया कि भोजन में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण तत्व प्रेम है। गुरुदेव ने सत्संग कराया जिसमें ६००० से ज्यादा अभ्यासी सम्मिलित हुए। दोपहर के समय गुरुदेव ने एक घन्टा बच्चों के साथ बिताया। सत्संग के पश्चात सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें एक साधक की दुविधा और उसको सहज मार्ग से मिलने वाले मार्गदर्शन को दर्शाया गया। गुरुदेव ने अपने कमरे से कार्यक्रम को

खंड ४, अंक ३ मई २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

टेलिविजन पर देखकर उसका आनन्द लिया।

१४ मार्च को गुरुदेव ने सुबह का सत्संग ७ बजकर ३० मिनट पर कराया। सत्संग के पश्चात उन्होंने एक सन्देश दिया जिसमें उन्होंने चरित्र निर्माण की आवश्यक्ता पर बल दिया जिससे हृदय के प्रकाश को और ज्यादा चमकाया जा सके। उसके बाद १ बजकर ४५ मिनट पर गुरुदेव हवाईअड्डे के लिये रवाना हो गये।

चैन्नई – गुरुदेव की घर वापसी

आुरुदेव १४ मार्च को हैदराबाद से चैन्नई के लिये रवाना हुये। इस बार वे डेढ़ महीने के अन्तराल के बाद चैन्नई लौट रहे थे। चैन्नई हवाईअड्डे पर अभ्यासियों की भीड़ जमा थी जो अपने प्रियतम को देखकर खुशी से झूम उठे। हवाईअड्डे से वे सीधे गायत्री पहुँचे जहां उन्होंने एक सप्ताह बिताया। इस दौरान गुरुदेव ने आराम किया और शाम को लोगों से मुलाकात की, कभी–कभी उन्होंने सत्संग कराया और कभी अभ्यासियों से केवल बातचीत की। उसके बाद से गुरुदेव अपना समय गायत्री और आश्रम के बीच विभाजित करते आ रहे हैं, इस कारण वे आराम कर पाते हैं और कभी–कभी अभ्यासियों के साथ समुद तट पर विश्राम कर पाते हैं। गुरुदेव का मिशन के प्रबन्ध संचालन, ई–मेल का आदान–प्रदान और नये प्रशिक्षक बनाने का कार्य सामान्य रूप से चलता रहता है।

अभ्यासियों का बड़ी संख्या में मणपाक्कम आश्रम में आना

मुम्बई केन्द्र से लगभग ५०० अभ्यासियों का एक बड़ा समूह ४ दिन के लिये मणपाक्कम आश्रम आया और गुरुदेव ने उन्हें कई सत्संग कराये। अभ्यासियों ने आमन्त्रित प्रशिक्षकों और कार्यकर्ताओं के साथ प्रतिदिन वार्ताएं आयोजित करके इस अवसर को एक गोष्ठी का रूप दे दिया। एक शाम अभ्यासियों ने गुरुदेव के लियें एक विशेष केक काटा और प्रोग्राम आयोजित किया जिसका गुरुदेव ने खूब आनन्द लिया। आजकल भारत के विभिन्न केन्द्रों से अभ्यासियों के समूह मणपाक्कम आश्रम लगातार आते रहते हैं, अकेले पिछले एक महिने में ही लगभग ३३०० अभ्यासी गुरुदेव का सान्निध्य पाने के लिये मणपाक्कम?आश्रम आये। १० अप्रैल को गुरुदेव ने ८ विवाह संपन्न कराये। यद्दपि गुरुदेव के पैरों में दर्द रहता है फिर भी उन्होंने सभी विवाह खड़े रहकर संपन्न कराये।

अपनी फसल का फल पाते गुरुदेव

गुरुदेव लालाजी मेमोरियल ओमेगा इन्टरनेशनल स्कूल के विध्यार्थियों के साथ समय व्यतीत करते रहे हैं और इन विध्यार्थियों की ओर उनका विशेष ध्यान रहा है। लगभग ६० विध्यार्थियों ने ध्यान करना आरम्भ कर दिया है, इनमे से काफी विध्यार्थी १८ वर्ष से कम की उम्र के हैं लेकिन इन्हें गुरुदेव ने ध्यान करने की विशेष अनुमति दी है। इन विध्यार्थियों को आश्रम मे सत्संग के दौरान सबसे आगे बैठा देखा जा सकता है। एक शाम गुरुदेव ने इन विध्यार्थियों को अपने कॉटेज मे सत्संग कराया और फिर उनके साथ शाम का भोजन किया। इस स्थिति पर गुरुदेव ने सन्तोष व्यक्त करते हुए कहा "मैं उस किसान की स्थिति मे हूँ जो अपनी बोई हुई फसल के फल पाता है, मै इन बच्चों पर कार्य करता रहा हूँ और वही मेरी प्राथमिकता है, पढ़ाई तथा अन्य वस्तुओं के बारे में मैं चिन्तित नहीं हूँ।" अध्यापकों की भूमिका के विषय मे गुरुदेव ने कहा,"अध्यापक वह है जो यह निर्धारित करे कि विध्यार्थी वह सब ग्रहण करे जो कि वह कह रहा है न कि इस बात पर ध्यान केन्द्रित करे कि वह क्या दे रहा है, एक अच्छा अध्यापक सदा ही विध्यार्थियों में आश्चर्य और आकर्षण की भावना पैदा करता है।"

दक्षिण ज़ोन के लिये इन्डिया स्कालर्स ट्रेनिंग प्रोग्राम

१६ अप्रैल को गुरुदेव ने इन्डिया स्कालर्स ट्रेनिंग प्रोग्राम का उद्घाटन किया जिसमें उन्होंने भारत के दक्षिणी राज्यों से आये ५९ सदस्यों को सम्बोधित किया। गुरुदेव ने ज्ञान की सीमाओं, इस जीवन से आगे के विषय में हमारी अज्ञानता और सहज मार्ग में कैसे हर चीज़ प्राणाहुति के द्वारा दी जाती है, जैसे विषयों पर जोर दिया। उन्होंने आगे कहा कि सांसारिक जीवन का कठिनाइयों से भरे रहना निश्चित है, भूतकाल में संत भी इन कठिनाइयों और परेशानियों से अछूते नहीं रहे।

घोषणाँए

नई नियुक्तियाँ

विजय कुमार अग्रवाल
केन्द्र प्रभारी, भटिन्डा केन्द्र

मेजर जनरल आनन्द नरायन मुद्रे (सेवा निवृत)
केन्द्र प्रभारी, जबलपुर केन्द्र

सन्दीप प्रधान
केन्द्र प्रभारी, ग्वालियर केन्द्र

सतखोल के लिये डॉक्टर स्वयं सेवक

सतखोल चिकित्सा केन्द्र के लिये अभ्यासी डॉक्टर स्वयं सेवकों का पंजीकरण जुलाई २०११ से दिसम्बर २०११ अवधि के लिये चालू है। कृपया शीघ्र अति शीघ्र अपनी ईच्छा व्यक्त करें। स्वयं सेवा की अवधि १५ दिन है।

अधिक जानकारी के लिये नीचे दिये गये पते पर संपर्क करें :
डॉ सी के प्रसन्नाकुमार
रेरेसिडेन्ट फिजीशियन
चिकित्सा केन्द्र, सतखोल

गुरुदेव के ८५वे जन्मोत्सव के लिये पंजीकरण

भारत के तिरूपुर मे मनाये जाने वाले गुरुजी के ८५वे जन्मोत्सव के लिये पंजीकरण शुरु हो गये हैं। भारत के अभ्यासियो से अनुरोध है कि वे अपना पंजीकरण करा लें। पंजीकरण फार्म की प्रति इसमे संलग्न है। पंजीकरण फार्म इंटरनेट साइट से भी लिया जा सकता है। विदेश के अभ्यासी ऑन्लाइन पंजीकरण कर सकते हैं। विवरण वेबसाइट पर प्रकाशित है।

अभ्यासियो से अनुरोध है कि पंजीकरण कराने से पहले स्वास्थ्य एवं बचाव संबंधी यात्रा के परामर्शो को पढ लें। इसका विवरण मिशन की वेबसाइट http://www.sahajmarg.org /july-24-celebrations/2011 पर है।

व्हिसपर्स फ्रॉम दी ब्राईटर वर्ल्ड – ए थर्ड रेवलेशन

गुरुदेव की स्वीकृति के साथ, २८ मार्च के बाद से, अभिदाता 'प्रतिदिन एक व्हिसपर' श्रंखला के नये प्रकाशन– व्हिसपर्स फ्रॉम दी ब्राईटर वर्ल्ड – ए थर्ड रेवलेशन से प्राप्त करना शुरु करेंगे। यदि आपने अभी तक इस दैनिक ईमेल सर्विस के लिये अपना नाम पंजीकृत नही किया है और करना चाहते हैं तो हमारी वेब साईट http://www.sahajmarg.org/literature/newsletters पर पंजीकरण करें।

नए प्रकाशन

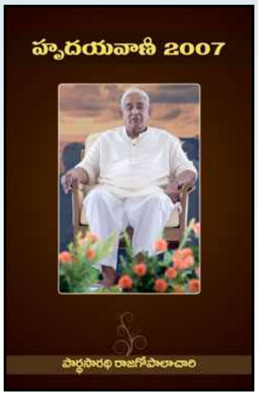

हृदय की आवाज २००७ , तेलगु

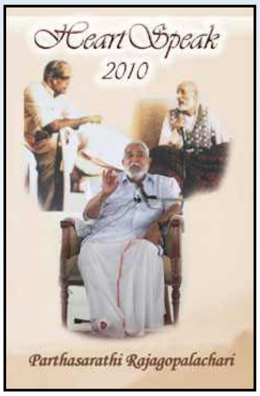

हृदय की आवाज २०१० , अंग्रेजी

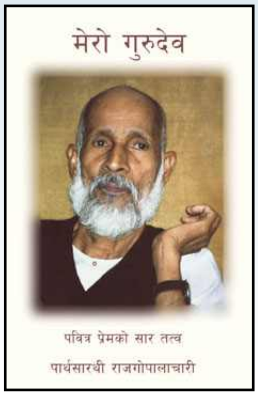

मेरे गुरुदेव , तेलगु , नेपाली और कनड्डा

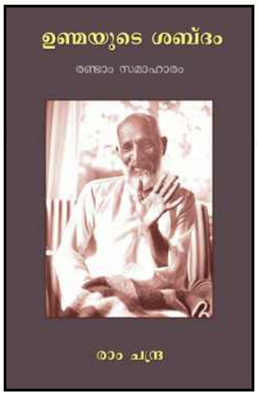
ऋत वाणी , मलयालम

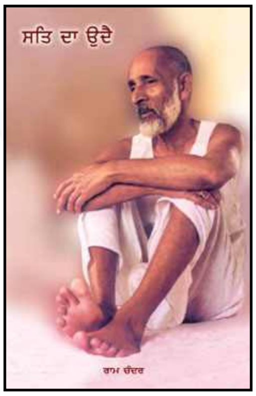

सत्य का उदय , पंजाबी

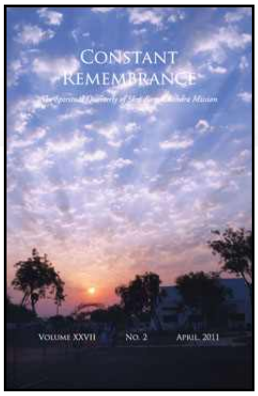

सतत स्मरण , अप्रैल २०११

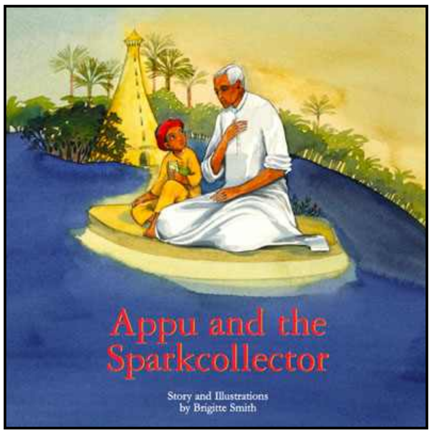

स्पार्क कलेक्टर २, (चिंगारी एकत्रित करने वाला)

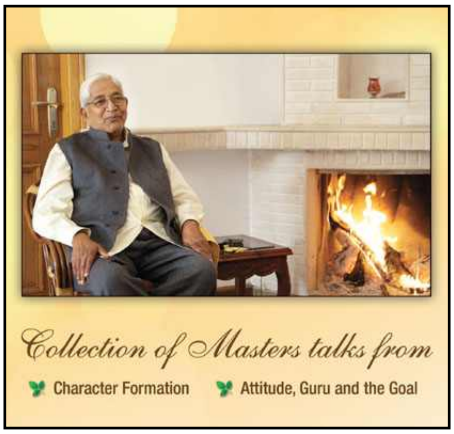

चरित्र निर्माण – एम पी ३ अंग्रेजी

खंड ४, अंक ३ मई २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

अतीत पर एक नजर

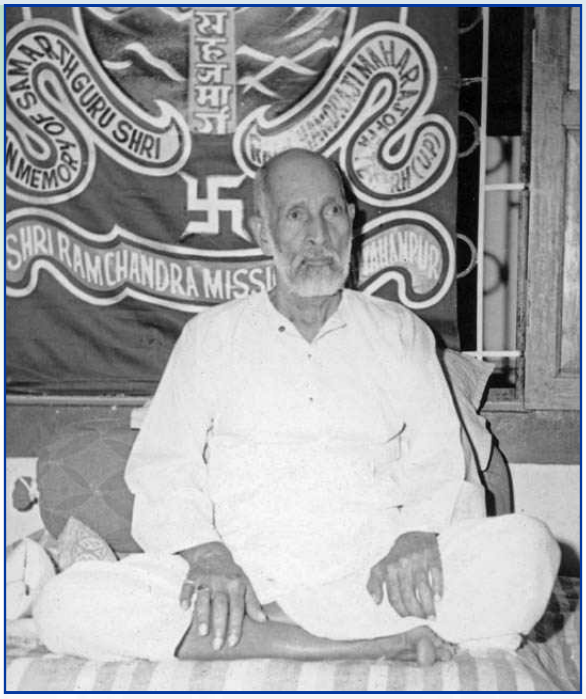

६ अप्रैल से २३ अप्रैल , १९७७ की मलेशिया और सिंगापुर की विदेश यात्रा के दौरान गुरुदेव बाबूजी महाराज के साथ गए। ३० अप्रैल को मदुरै में बाबूजी के जन्मदिन के उत्सव के रूप में यह यात्रा जारी रही। निम्नलिखित लेख गुरुदेव की डायरी (उनके पदचिन्हों पर) से हैं जिसमें इन उत्सवों का विवरण है।

३० अप्रैल, १९७७–शनिवार

सभी इन्तजाम पूरे हैं, यह देखने के लिए मैं वालमजी मेंसन से 'पेरीयार मालिगाई' के लिए निकला जो डेढ किलोमीटर की दूरी पर तल्लाकुलम में है। आज बाबूजी का ७९ जन्मदिन है और मदुरै केन्द्र सौभाग्यशाली है जहाँ यह उत्सव सम्पूर्ण भारत के लिए केन्द्रीय रूप में आयोजित किया जा रहा है।

प्रातः ९:३० बजे–बाबूजी समय से कुछ मिनिट पहले आ गए। एक हज़ार से अधिक अभ्यासियों ने सप्रेम उनका स्वागत किया, जो ध्यानकक्ष में एकत्रित थे और आतुरता से सुबह ८ बजे से उनका इन्तज़ार कर रहे थे। बाबूजी ने २० मिनट का सामूहिक ध्यान कराया। इतनी सुबह भी बहुत गर्मी थी! बाबूजी के दोनों ओर मंच पर पंखे चल रहे थे। फिर भी मुझे उनकी तकलीफ़ (गर्मी के कारण) दिखाई दे रही थी। प्राणाहुती नम्र और सौम्य थी। सत्संग के बाद बाबूजी ने कुछ देर आराम किया। तत्पश्चात उन्होंने एक अलग स्थान पर प्रसाद बनाया। उसके बाद बाबूजी मंच पर वापस आ गए। तब कुछ वार्ताएँ दी गईं। वालमजी मेंसन जाने से पहले बाबूजी ने साढे ग्यारह बजे तक विश्राम किया।

बाबूजी शाम ६ बजे ध्यान–कक्ष में फिर से आए और शाम का सत्संग कराया। उन्होंने मुझसे कहा, "सुबह मैंने आधा कार्य किया था, बाकी का कार्य मैं अब पूरा करूँगा"।

किताबों की बिक्री कुछ ३०००/– रुपए की हुई। हम रात ९ बजे घर वापस आए। बहुत से अभ्यासी बाबूजी के साथ समय व्यतीत करने आए। सभी ने उत्सव के इन्तज़ाम, बाबूजी द्वारा दी गई पूजा, आदि की प्रशंसा की। बाबूजी ने कहा, "यह सब लालाजी महाराज का परोपकार है। जो कोई भी आया, खाली हाथ नहीं गया"।

बहनों का परीक्षण दल, इन्दौर, मध्यप्रदेश

वैसे तो अभ्यासी के रूप में बहनों और भाईयों के बीच कोई अन्तर नहीं है, किन्तु दोनों को जीवन में अलग–अलग भूमिका निभानी पड़ती है। दोनों को जीवन में अलग–अलग परिस्थितियों में आध्यात्मिक मूल्यों का पालन करना होता है।

ऐसे ही कुछ विषयों को ध्यान में रखते हुए, बहनों के एक दल ने हर तीसरे शुक्रवार को सत्संग के लिए मिलने की पहल करी और साथ ही अपनी साधना से संबंधित विभिन्न अनुभवों को आपस में बाँटा।

पहली सभा १८ मार्च को बहन कला के घर पर आयोजित की गई। करीब २० बहनों ने सत्संग में हिस्सा लिया जिसके पश्चात 'गुरू और लक्ष्य' नामक किताब से एक पाठ पढ़ा गया। उन्होंने चरित्र निर्माण के महत्व पर भी चर्चा करी। सम्पूर्ण जीवन हम आनन्द के पीछे या पीडा से दूर भागते हैं। अब मालिक हमें सिखा रहे हैं कि सेवा का भाव ही समय की आवश्यकता है। साधना के विभिन्न पहलुओं पर भी चर्चा करी। सभी बहनों को विश्वास है कि इस समूह का धीरे–धीरे विकास होगा तथा अधिक प्रतिभागियों को इससे लाभ होगा।

युवा सेमीनार–मुम्बई

५ मार्च को दो दिवसीय पूर्ण महाराष्ट्र तथा गोआ यूथ सम्मेलन (ए. एम. जी. वाय. सी) बाबूजी मेमोरियल आश्रम, पनवेल में दोपहर दो बजे आरम्भ हुआ। कार्यक्रम का विषय था 'माया के जाल से मुक्ति'। १५० अभ्यासियों ने सम्मेलन में भाग लिया। गोष्ठी की सामग्री मालिक की शिक्षाओं पर आधारित थी, जो कि पुणे और मुम्बई के प्रशिक्षकों के निर्देशन में बनाई गई थी। इस कैम्प के दौरान मिशन के युवाओं की अभूतपूर्व प्रतिभा उभरकर सामने आई। पुणे के प्रतिभागियों ने एक नाटिका प्रस्तुत करी जिसका शीर्षक था–'मेरी चीज (खाने का पनीर) को किसने हिलाया'? मुम्बई से आए प्रतिभागियों ने भी एक नाटिका प्रस्तुत की जिसका शीर्षक था–'ऐसे जीओ जैसे कि तुम अगले क्षण मरने वाले हो'। भाई संजय भाटिया, भाई संतोष श्रिनिवासन और भाई सुभाष वैद्य द्वारा बाँटे गए अनुभवों द्वारा प्रतिभागियों को प्रेरणा मिली। समूह–विचार–विमर्श तथा स्वयं का मूल्यांकन का सत्र भी हुआ। कैम्प के दौरान का वातावरण बहुतकुछ वैसा ही था जैसा कि एक भंडारा के दौरान होता है। मालिक की उपस्थिति गहराई से महसूस की गई। जिन युवाओं ने इस कैम्प में हिस्सा लिया वे बहुत अधिक लाभान्वित हुए।

वडोदरा, गुजरात – होटल मैनेजमेंट संस्था के विद्यार्थियों को दी गई प्रस्तुति

२६ फ़रवरी को गुजरात ईन्स्टीट्यूट ऑफ–होटल मैनेजमेंट एवं पॉंडिचेरी विश्वविद्यालय(एम.बी.ए.) के विद्यार्थीयों हेतु एक खुला सत्र का आयोजन किया गया। सहज मार्ग के मूल–तत्व–'ध्यान' एवं 'सफ़ाई' को सरल भाषा एवं दैनिक उदाहरणों के जरिये प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित युवा, उर्जा एवं उत्साह से रोमांचित नजर आ रहे थे। चूंकि ये छात्र, महाविद्यालयीन जीवन से बाहर निकलकर, अग्रसर होटल उद्योग में दस्तक़ देने की तैयारी में थे, इस वार्ता को " संतुलित जीवन" और "दिल की बात सुनना" पर केन्द्रित किया गया। विद्यार्थीयों ने धयानपूर्वक युवा प्रवक्ताओं की वार्ता सुनी।

सम्मिलित ९२ विद्यार्थीयों में से ५६ छात्रों ने "ध्यान" शुरू करने की इच्छा ज़ाहिर की। सहज़ मार्ग के संदेश पत्रक का वितरण किया गया। यह उम्मीद है कि ये विद्यार्थी अपनी उर्जा को सही दिशा में उपयोग कर सकें। संस्था के निदेशक इस कार्यक्रम से खुश नज़र आये तथा भविष्य में ऐसी अन्य कार्यशाला आयोजित करने का आग्रह किया।

बच्चों की परवरिश पर कार्यशाला,बडोदा, गुज़रात

बड़ोदा हाई स्कूल में वी.बी.एस.ई के स्वंयसेवकों को अभिभावकों के लिए एक कार्यशाला आयोजित करने का अवसर प्राप्त हुआ। कार्यशाला कि शुरुआत सामुहिक परिचर्चा से हुई जिसमें परिवार का माहौल, माता–पिता की बच्चों से तथा बच्चों की माता–पिता से अपेक्षाएँ, बच्चों की भावनाओं को समझना, प्यार, अनुशासन, आज़ादी तथा वातावरण जैसे विषय सम्मिलित किये गए। इन विषयों का समायोज़न वर्तमान दौर में माता–पिता एवं बढ़ते बच्चों के बीच मौज़ूदा स्थिति को नज़र में रखकर किया गया। तत्पश्चात हमारे प्रशिक्षक ने सहज मार्ग के दृष्टीकोण से बच्चों की परवरिश इस विषय पर वार्ता दी। उन्होनें एक अभिभावक के रूप में अपने अनुभव बाँटे तथा बताया कि किस तरह प्रतिकूल परस्तिथियों का सामना उन्होंने शांत दिमाग एवं उन्मुक्त हृदय रख कर किया। सभी अभिभावक ३ घंटे तक इस कार्यक्रम में तल्लीन थे एवं स्वंयसेवकों से चर्चा करते रहे। इस कार्यशाला में सम्मिलित,३० में से १५ अभिभावकों ने "ध्यान" शुरू करने की इच्छा ज़ाहिर की। इस कार्यक्रम का बहुत अच्छा प्रतिसाद मिला तथा उक्त विद्यालय ने भविष्य में भी ऐसी कार्यशाला आयोजित करने की विनंती की।

"मैं और प्रकृति" – ग्रीष्म कालीन शिविर–बैंगलोर

बनशंकरी आश्रम,बैंगलोर में ८–१० अप्रैल के दरम्यान एक त्रिदिवसीय शिविर में सात से १५ वर्ष आयु वर्ग के ८० बच्चों ने प्रतिभागिता दिखाई।

प्रतिभागी बच्चों को प्रकृति के पंच तत्व पर आधारित विभिन्न समूह में आवंटित किया गया। प्रत्येक समूह ने इन पंच तत्व पर सामूहिक परिचर्चा, कला एवं शिल्प गतिविधि एवं अन्य प्रस्तुति दी। औषधी पौधौं पर दी गई प्रस्तुति से प्रतिभागी बच्चों में पौधों के प्रति रुझान दिखाई दिया। पाँच इन्द्रियों पर आधारित एक खेल से उन्हें यह एहसास हुआ कि इन इन्द्रियों का वे बहुत ही कम इस्तमाल करते हैं।

दूसरे दिन का शिविर "पुर्नचक्रण","पुर्न–उपयोग" तथा "न्यूनिकरण" जैसे विषयों पर आयोजित था। कार्यक्रम में एक विशेषज्ञ ने "वर्षा जल संग्रहण" का जीवंत प्रदर्शन किया। "निरर्थकता से सार्थकता" पर आधारित कला एंव शिल्प गतिविधि से बच्चों ने समाचार पत्र से डायरी, आकर्षक बर्तन, पेन स्टेंड तथा पुरानी प्लास्टिक बोतल से फूल दान आदि बनाये। कुंभक चक्र से घड़े बनाकर बच्चे बहुत रोमांचित हुए। तत्पश्चात खजाना खोज, कठपुतली मंचन एंव चलचित्र का प्रदर्शन किया गया।

तीसरा दिन "आंतरिक प्रकृति" विषय पर केन्द्रित था। इस विषय पर कुछ खेल आयोजित किये गये जिसकी व्याख्या वी.बी.एस.ई. पाठयक्रम के मूलभूत उदेश्य से ली गई। प्रतिभागी बच्चों द्वारा तैयार किये गए कार्य को एक प्रदशर्नी के रूप में माता–पिता के लिए प्रस्तुत किया गया। बच्चों ने "प्यार" "साहस" एवं "संतोष"जैसे मूल्यों पर आधारित नाट्य रूपांतर प्रस्तुत किये।

इस हर्षोलास में डूबे हुए बच्चों ने विभिन्न गतिविधियाँ जैसे खेल–कूद, नाटक एवं सामूहिक परिचर्चा से आध्यात्म के मूल्यों को बहुत ही सूक्ष्म रूप में आत्मसात किया।

खंड ४, अंक ३ मई २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

निबन्ध प्रतियोगिता प्रमाणपत्र वितरण

दिल्ली – २६ फरवरी को भाई ए.पी.पाल्टा (क्षेत्रीय प्रभारी) ने १७ क्षेत्रीय पुरुस्कार विजेताओ को और १ राष्ट्रीय पुरुस्कार विजेता को पुरस्कार प्रदान किये। भाई पाल्टा ने इस बात को महत्व देते हुए कहा कि इस प्रकार की प्रतियोगिता मानव मूल्यों की बढ़ोतरी करते हुए बच्चों के भविष्य को उज्जवल बनाती है । पुरुस्कार विजेताओं ने मिशन को धन्यवाद दिया और निबन्ध प्रतियोगिता के लिखने के दौरान हुए अनुभवों और विचारों को व्यक्त किया।

दिल्ली

मदुरै – २ फरवरी को ७०० से ज्यादा अभ्यासी, २०० विद्यार्थी, १०० विद्यार्थियो के माता– पिता और शिक्षक इकठ्ठे हुए। श्रीमती पदमा रामचन्द्रन व मदुरै ईवनिन्ग कालेज के प्रधानाध्यापक डाक्टर पी रामचन्द्रन, ने पुरुस्कार वितरण किया । श्री अशोक, कार्यक्रम संचालक, ऑल इन्डिया रेडियो, ने आध्यात्मिक शिक्षा की महत्ता पर जोर दिया ।

मदुरै

मुज़फ्फ़रपुर – मुज़फ्फ़रपुर में २७ फरवरी को श्री एस. एम. राजू (आई. ए. एस.)कार्यक्रम के मुख्य अतिथी थे । लगभग १५० लोग जिनमें शिक्षक, अभिभावक और प्राध्यापक गण उपस्थित थे। पुरुस्कार वितरण के बाद श्री एस. एम. राजू ने सहज मार्ग की तारीफ़ करते हुए कहा कि यह ध्यान के बारे में जागरुकता को बढ़ा रहा है, स्वयं पर नियन्त्रण और युवाओं मे चरित्र निर्माण कर रहा है। विद्यार्थियों और शिक्षकों ने भविष्य मे इस तरह के आयोजन में और अधिक उत्साह से भाग लेने का वायदा किया।

मुज़फ्फ़रपुर

रोहतक – ८ फरवरी को एम. डी. यूनिवर्सिटी (एम. डी. यू.) रोहतक के अम्बेडकर हाल में कुलपति प्रोफेसर आर. पी. हूडा और उनकी पत्नी श्रीमती वेदवती हूडा मुख्य अतिथि थे। लगभग ४०० लोगों ने जिसमें कि विद्यार्थी, उनके माता–पिता, शिक्षक, अभ्यासी व उनके बच्चे थे ने इस आयोजन मे भाग लिया। निबन्ध प्रतियोगिता, एस. आर. सी. एम, यू. एन. आई.सी., वी. बी.एस.सी. और सहज मार्ग के उपर वार्ताए दी गईं।

चंडीगढ़

चंडीगढ़ – १८ फरवरी को पंजाब विश्वविद्यालय के गोल्डन जुबली कक्ष में कार्यक्रम का आयोजन किया गया । मुख्य अतिथि के रुप मे कला के प्राध्यापक को निमन्त्रित किया गया। आयोजन 'युवावस्था : प्रतिज्ञा और प्रयत्न का एक समय' के भाव के ऊपर केन्द्रित था। पुरुस्कार वितरण के पश्चात् एक लघु चलचित्र दिखाया गया।

पामबी – २७ फरवरी को हुए आयोजन मे ८ पुरुस्कार विजेताओं को प्रशस्ती पत्र प्रदान किये गये। बहुत से विद्यार्थियों , उनके माता–पिता एवं संस्थाओं के प्रमुखो ने भाग लिया । भाई रमन भ?थिरिपड और भाई नारायणन ने प्रशस्ती पत्र प्रदान किये । सभी विद्यार्थियों ने अपने विचार व्यक्त किये । विद्यार्थियों के माता–पिता ने मिशन द्वारा बच्चो मे मानव गुण विकसित करने के लिये बहुत तारीफ़ की।

मेरठ

मेरठ – मेरठ मे ४८४ स्कूल, कालेज और दूसरे शिक्षण संस्थाओ ने भाग लिया जिसमे कुल १६६५३ प्रतिभागी ३ श्रेणियों मे थे। मूल्यांकन के बाद ६४७ प्रशस्तीपत्र प्रदान किये गए। सभी प्रतिभागियों को उनके माता–पिता के साथ आने का निमन्त्रण दिया गया। प्रशिक्षकों ने सहज मार्ग के बारे मेमेहमानों को बताया और छोटी पुस्तिका व मिशन का साहित्य सभी उत्सुकों को प्रदान किया गया।

सुल्तानपुर

२० फरवरी को सुल्तानपुर मे ६०० से ज्यादा विद्यार्थी, उनके माता–पिता और सुल्तानपुर जिले के ९७ विद्यालयों के प्रधानाध्यापक समारोह मे सम्मिलित हुए । विद्यार्थीगण आश्रम के वातावरण से प्रभावित हुए और उनहोंने मिशन के बारे मे जानने के लिये उत्सुकता ज़ाहिर की। आसपास के केंद्र जैसे कि इलाहाबाद, जौनपुर और वाराणासी से आये हुए अभ्यासियों ने भी कार्यक्रम मे हिस्सा लिया। डॉक्टर शिवमोहन

शाहजहांपुर

पांडे ने युवाओ की आध्यात्मिकता मे भागीदारिता के बारे मे बताया।

२७ फरवरी को मुरादाबाद आश्रम मे एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमे ९५ विद्यालयों के १८० विद्यार्थियों ने अपने माता-पिता व शिक्षकों के साथ हिस्सा लिया। बहिन नीलम निबन्ध के तीन विषयो के बारे मे बोली। भाई श्रवण कुमार ने प्रतिभागियों को प्रशस्तिपत्र प्रदान किये। मेहमानों को वातावरण का आनन्द लेते हुए देखा गया और बहुत से लोगो ने सहज मार्ग के बारे में पूछा और इसमे शामिल होने की अपनी इच्छा प्रकट की।

शाहजहांपुर: शाहजहांपुर केन्द्र ने २७ फरवरी को समारोह का आयोजन किया। केन्द्र के तहत ४५ शैक्षणिक संस्थानो में इस प्रतियोगिता का आयोजन किया। मुख्य अतिथि डॉ रमाशंकर मौर्य (ए डी एम) ने प्रमाण-पत्र बाँटे। केन्द्र-प्रभारी ने मिशन का परिचय दिया। भाई भगवान दास ने इस प्रतियोगिता के उद्देश्य के ऊपर प्रकाश डाला।

गुलबर्गा: २ फरवरी को ५० छात्र अपने माता- पिता एवं शिक्षकों के साथ कार्यक्रम में उपस्थित हुए। भाई प्रहलाद पक्निकर, भाई श्रीकांत जोशी एवं भाई राजू ने सहज मार्ग सिद्धांत की प्रमुख विशेषताओं के बारे में बताया।

हुबली: १३ फरवरी को भाई श्री वी ए , मचकनूर के ए एस एवं कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, धारवाड़ जिले के अतिरिक्त शिक्षा आयुक्त, ने कहा कि वे बहुत खुश हैं कि हम उनके विभाग कि जिम्मेदारी निभा रहे है। उन्होने शिक्षा में मूल्यों की जरूरत पर जोर दिया। भाई बरकोल ने इस प्रतियोगिता के उद्देश्य और छोटे उम्रवालों के विचारों पर पड़ने वाले असर के बारे मे बताया। भाई राजू ने सहज मार्ग के सिद्धांतो के बारे मे समझाया।

बीदर: २७ फरवरी को करीब ५० छात्र अपने माता-पिता एवं शिक्षकों के साथ उपस्थित हुए। भाई हरिलाल चवान (केन्द्र प्रभारी) ने इस प्रतियोगिता के उद्धेश्य और साल २०१० में मिली जबरदस्त प्रतिक्रिया के बारे मे बताया। भाई राजू ने आध्यात्मिक्ता कि जरूरत और सहज मार्ग की धारणा के बारे मे बात की। "सहज मार्ग अभ्यास के मूल-तत्व" किताब को १८ उम्र से बड़े छात्रों में बाँटा गया।

अनेक छात्रों ने अपने निबंध की तैयारी के अनुभव को बाँटा। उन्होने कहा कि चरित्र, आज़ादी, आकांशा एवं अरमान जैसे शब्दों के बारे मे कभी विचार भी नहीं किया। तैयारी के दौरान इन शब्दों के सही अर्थ के खुलासे से वे अचंबित थे। माता-पिताओं ने भी अपनी खुशी व्यक्त कि और मिशन की कोशिशों कि प्रशंसा की। काफ़ी लोगों ने मिशन मे भाग लेने कि इच्छा ज़ाहिर की।

बेलारी : अनेक विद्यालयों से २५ छात्राओं ने २ फरवरी के कार्यक्रम मे भाग लिया। सहज मार्ग के परिचय के बाद छात्रों ने निबंध लेखन प्रतियोगिता के बारे में बात की। जीवन मूल्यों और आध्यत्मिक्ता के विषय में उनके विचार सुनना एक सारगर्भित अनुभव था।

हमनबाद : ६ मार्च को भाई बक्का रेड्डी के घर में १५ लोगों कि उपस्थिती में कार्यक्रम हुआ। छात्रों को प्रमाण-पत्र दिये गये। भाई श्रीकांत जोशी ने "आध्यत्मिक्ता - एक अनिवार्यता" पर संक्षेप चर्चा की।

लखनऊ: लखनऊ नगर में ९५ सन्स्थाओं में निबंध लेखन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। २७ फरवरी को ४०० से अधिक छात्र अपने माता-पिता एवं शिक्षको के साथ उपस्थित हुए। लखनऊ विश्वविध्यालय के समाज शास्त्र विभाग के प्रमुख, प्रोफ़ेसर ए. के. श्रीवास्तव, मुख्य अथिती थे और उन्होने पुरस्कार भी बाँटे।

शाहजहांपुर

गुलबर्गा

हबली

बीदर

बेलारी

हमनबाद

भाई ए.पी.दुरई की मैंगलूर (कर्नाटक) भेंट

भाई ए.पी.दुरई , उप सचिव, ने २४ फरवरी को मैंगलूर केंद्र को भेंट दी। करीब ५० अभ्यासी उनसे मिलने के लिए एकत्रित हुए। नलिनी बहन ने नये अभ्यासियों के लाभ के लिए प्रार्थना का अर्थ समझाया।

भाई सुब्रया पाई, भाई प्रसाद कृष्णा, बहन लता होल्ला, भाई गणेश एवं भाई राधाकृष्णा ने मिलकर आश्रम कि जमीन खोजने के लिए एक समीती बनाई। भाई दुरई ने गुरुदेव में श्रद्धा रखते हुए काम शुरू करने को कहा और कहा कि संसाधन अपने आप आयेंगे।

अभ्यासियों के साथ पारसपरिक संवाद के दौरान भाई दुरई के द्वारा व्यक्त किए गए कुछ विचार इस प्रकार हैं :

- इसका क्या मतलब है –"हमे उस स्थिति तक ले जाने के लिये तू ही एक मात्र ईश्वर एवं शक्ति है"। गुरुदेव को स्वीकार करने से तथा उन्मे यह विश्वास करने से कि वह ईश्वर एवं शक्ति है, अभ्यासी निडर और साहसी हो जाता है तथा शक्तिशाली लोगों के किसी प्रकार के दबाव के आगे नही झुकता और न ही कोई गलत आदेश स्वीकार करता है।
- क्रोध अच्छा होता है जब हम इसे हमारी गलतियों और कमियों को सुधारने के लिये अपनी तरफ केन्द्रित करते हैं।
- यह भीख मांगना नहीं है। प्रार्थना इस तरह करनी चाहिये जैसे कि एक भिकारी विनम्रता के साथ अपने हाथ मे एक कटोरा लिये हुए गुरुदेव के सामने खड़ा है लेकिन यह नही जानता के उसे क्या मांगना है और उसे जो गुरुदेव से मिलता है उसे स्वीकार कर लेता है। कोई पूर्वानुमान नही है। जब हम इस तरह से प्रार्थना करते हैं तो हाड़ और मास मे व्यक्त गुरु ईश्वर से दिव्यता को खीचते हैं।
- गुरुदेव मे इस भॉव के साथ पूर्ण विश्वास रखना के "तुम अब सब कुछ संभालो, मै सिर्फ तुम्हारे हाथों मे एक हथियार मात्र हूँ"। ऐसा विश्वास कार्यों को अंजाम देने के लिये दिव्य शक्ति को आकर्शित करता है।
- भाई दुरई ने गुरुदेव की किताबों को लगातार पढ़ने, उनपर सत्संग के बाद प्रस्तुतियां देने , अभ्यासी के घरों में सभाए करने की जरूरत पर जोर दिया। उन्होने कहा कि गुरुदेव का ध्यान अपनी और आकर्षित करने का रष्स्य, उनके काम करने में है।

तिरुपुर में हुए विविध कार्यक्रम – मार्च २०११

तमिलनाडु के प्रशिक्षक चे?ीपलायमयोगाश्रम में ४ और ५ मार्च को उपसचिव भाई ए.पी.दुरई द्वारा संचालित सेमिनार में एकत्रित हुए।

६ मार्च को भाई दुरई ने रविवार का सत्संग कराया और उसके पश्चात पूर्ण दिवस कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम के दौरान सामूहिक चर्चा, सवाल–जवाब एवं प्रशिक्षक द्वारा भाषण भी रखा गया।

तिरुपूर में गुरुदेव का जन्म दिवस मनाने के लिए समिति का संगठन किया गया। समिति के सदस्य ९ मार्च को वार्तालाप के लिए इकट्ठा हुए। सचिव भाई उमाशंकर बाजपेई ने सत्संग कराया जिसके बाद परिचय सन्न हुआ। सदस्यों ने फिर डी. जे. मैदान का निरीक्षण किया तथा व्यवस्था एवं सुविधाओं के बारे में विभिन्न विभागों के स्वयं–सेवकों के साथ विचार–विमर्श किया।

नये अभ्यासियों के लिए उसी दिन अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम का अयोजन किया गया। कई अनुभवी अभ्यासियों ने भी इस कार्यक्रम में भाग लिया और उसका लाभ उठाया।

अंतरावलोकन का समय – नत्रमपल्लि के युवक, तमिलनाडु

नत्रमपल्लि आश्रम में १२ और १३ मार्च को ८५ अभ्यासियों के लिए युवक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आश्रम प्रबंधक भाई भरतराजन ने भाषण दिया। इसके पश्चात, भाई लक्ष्मिनारायणन ने "सहज मार्ग में युवकों कि भूमिका" पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम की विशिष्टता यही थी कि अभ्यासियों को विभिन्न स्थितियों में अंतरावलोकन करने का मौका मिला। ज्योतिष शास्त्र में विश्वास, आध्यात्मिक विवाहों का महत्व, परंपरा का महत्व इत्यादी विषयों पर समूह वार्तालाप ने गहराई से सोचने तथा अपने विचार बांटने का अवसर दिया। दिन का अंत एक बेहद प्रेरक एनिमेशन चलचित्र "स्पिरिट इन द नाइट" से हुआ।

दूसरे दिन की शुरुआत भाई रघुपति ने "युवक – सहज मार्ग का भविष्य" पर भाषण से की और इसके पश्चात भाई श्रीराम ने "आध्यात्मिक स्थिती को बनाये रखना" पर एक प्रस्तुती दी।

सहज मार्ग साधना के मूल बोध को मिशन के कई कार्यकलाप एवं प्रश्नोत्तरी द्वारा दर्शाया गया। दोपहर का विडियो कार्यक्रम इतना प्रेरणापूर्वक साबित हुआ कि अभ्यासियों को आशावादी चिंतन और दृढ संकल्प का महत्व समझ मे आया। अभ्यासियों ने कार्यक्रम के बारे मे अपनी भावनाओं को व्यक्त किया और आयोजको को कम से कम साल में दो बार दुहराने का निवेदन किया।

खंड ४, अंक ३ मई २०११
श्री राम चंद्र मिशन®
एकोज़ इंडिया वार्तापत्र

मिलाप एवं परिचर्चा – नेवेली केंद्र , तमिलनाडु

२० मार्च को नेवेली केंद्र, पुदुचेरी में एक सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें कुडलोर , विल्लुपुरम और नेवेली के लगभग १०० अभ्यासियों ने भाग लिया।

पुदुचेरी केंद्र द्वारा 'ध्यान का महत्व' और 'खुद को बदलो', कुड़लोर केन्द्र द्वारा 'स्वंय का अनुशासन' , विल्लुपुरम केंद्र द्वारा 'चरित्र–निर्माण' तथा नेवेली केन्द्र द्वारा 'आचारनीति एवं नैतिकता' इन विषयों पर प्रस्तुतिकरण जानकारी से भरपूर और सहभागी अभ्यासियों को सोचने के लिए प्रवृत्त करनेवाले सिद्ध हुए।

अधिवेशन में सभी अभ्यासियों की सक्रिय एवं संवादात्मक भागीदारी रही । इस सम्मेलन ने विभिन्न केंद्रो के अभ्यासियों को एक–दूसरे को जानने–समझने और उनमें बन्धुत्व–भाव बढाने में मदद की।

तिरुथुराईपूंडी, तमिलनाडु में ध्यान–केंद्र का उद्घाटन

पिछले साल अक्टूबर महीने में तिरुथुराईपूंडी में सहज मार्ग का आगमन हुआ जब २५ इच्छुक व्यक्तियों ने मिशन में प्रवेश किया। तब से इस केंद्र में रविवार के सत्संग का नियमित रूप से संचालन हो रहा है।

७ मार्च को भाई एस. प्रकाश, जोन प्रभारी ने इस नए ध्यान केंद्र का उद्घाटन किया । लगभग ४० अभ्यासी उपस्थित थे । सभाकक्ष एक अभ्यासी के घर की पहली मंजिल पर स्थित है । १३ मार्च को एक खुले सत्र का आयोजन किया गया । आसपास के केंद्रों के प्रशिक्षकों की सहायता से हो रहे इस केंद्र का विकास प्रसन्नता का विषय है।

तेनकसी, तमिलनाडु में परिचर्चा कार्यक्रम

२७ फरवरी को तेनकसी केंद्र ने युवाओं के लिए एक परिचर्चा–कार्यक्रम का आयोजन किया। ८ भाईयों और ३ बहनों सहित कुल ११ अभ्यासियों ने इस चर्चा में भाग लिया। चर्चा का विषय था, 'अपने मिशन के केंद्र का प्रभावशाली उपयोग करते हुए हम अपना विकास कैसे करें?' सभी सहभागी अभ्यासियों ने इस बात पर जोर दिया कि साधना को नियमित रूप से करना अति आवश्यक है क्योंकि यही हमारे संतुलित अस्तित्व के विकास का एकमात्र रास्ता है। सभी अभ्यासियों की सक्रिय भागीदारी होने के कारण यह चर्चा सार्थक सिद्ध हुई।

कार्यकर्ताओं की सभा– गुजरात

९ और १० अप्रैल को अहमदाबाद के मंडलीय (जोनल) आश्रम में उत्तर गुजरात (जोन ६ ए) के लगभग ५० संयोजकों एवं कार्यकर्ताओं की वार्षिक सभा आयोजित की गई। इस सभा का मुख्य उद्देश्य पिछले साल के कार्यों के परिणामो का पुनरवालोकन करना तथा वित्तिय वर्ष २०११–२०१२ के लिए विभिन्न कार्य–कलापों का संयोजन एवं केंद्रों का विकास करना था।

भाई राजेश अग्रवाल (जोन प्रभारी) ने इस बात पर जोर दिया कि हमें अपने गुरुदेव पर संपूर्ण विश्वास होना चाहिए जिसकी अभिव्यक्ति हमारे काम की सकारात्मक प्रवृत्ति और दृढ विश्वास के रूप में होनी चाहिए।

पहले सत्र में केंद्र–प्रभारी/ केंद्र–प्रबंधक/ उप–मंडलीय संयोजकों द्वारा प्रस्तुतिकरण दिये गए। हर एक समूह ने भाई ए. पी. दुरई द्वारा प्रस्तुत वार्ता 'संख्या एवं गुणवत्ता का विकास' पर भी चर्चा की।

दुसरे दिन विभागीय संयोजकों द्वारा विभिन्न क्रिया–कलापों एवं गतिविधियों पर प्रस्तुतिकरण दिये गए जैसे– निबंध–लेखन, प्रकाशन, वी. बी. एस. ई., पहचान–पत्र, वित्तीय लेखा–जोखा, घरों में सम्मेलन/खुली चर्चा, प्रशिक्षण, युवा वर्ग और एकोज वार्तापत्र। वे सभी अपने–अपने कार्य–क्षेत्र का प्रभावशाली प्रस्तुतिकरण करने में समर्थ रहे । सभी सहभागियों को प्रत्येक क्रिया–कलाप के पुनरावलोकन के लिए मार्गदर्शी मुद्दे दिए गए।

भाई अंकित व्यास और भाई केजल कनसारा ने इस संगोष्ठी का संचालन किया। भाई राजेश ने हर एक व्यक्ति को ऐसा ही उत्साह वर्षभर बनाए रखने व साथ ही उसे स्वंयसेवक बंधुओं में फैलाने के लिए प्रेरित करते हुए सत्र की समाप्ति की।

प्रकाश का केंद्र

कोइंबतूर केंद्र ने वर्ष १९७४ में आर. एस. पुरम में एक अभ्यासी के घर से काम करना शुरु किया। यद्यपि इसके बीज काफी पहले १९६८ में ही बाबूजी महाराज की भेंट द्वारा बोए जा चुके थे। रविवार सत्संग को आर. एस. पुरम के "गोल्ड मिस्ट" अपार्टमेंट के एक बड़े तलघर (तहखाने) में स्थान्तरित कर दिया गया था जहां २०० अभ्यासी बैठ सकते थे। इस कक्ष का उद्घाटन गुरुदेव के द्वारा २० मई १९९१ को हुआ था। गुरुदेव ने कोइंबतूर केंद्र की धीमी प्रगति के बारे में खेद व्यक्त किया था।

प्रगती की शुरुवात तब हुई जब नाचिपलायम गाँव में ३१ एकड जमीन (आश्रम के लिये १६ एकड) खरीदी गई जो पलक्कड से एक घंटे की दूरी पर हैं और केरल के पश्चिमी घाट के आर–पार तक फैली है। यह जमीन १ नवंबर २००० में गुरुदेव द्वारा पंजीकृत कराई गई थी।

एक बड़ा एवं भव्य ध्यान कक्ष बनाया गया जिसका उद्घाटन गुरुदेव ने ५ जनवरी २००७ में किया। इस कक्ष में आराम से १००० व्यक्ति बैठ सकते हैं तथा बरामदे में और ५०० व्यक्तियों के लिये जगह है। गुरुदेव मल्लमपुजा आते–जाते हुए इस जगह पर आराम करना पसंद करते हैं। बड़ी संख्या में लगाए गये पेड़ अच्छी तरह से बढ रहे हैं जिससे की अभ्यासियों की बस्ती, जो आश्रम को घेरती है, एक हरे द्वीप जैसी बन गयी है।

यहाँ एक वार्ता में उन्होंने कहा, "पहले गुरु को प्यार करो उसके बाद ध्यान करो, सफाई करो क्योंकि वे कहते हैं कि तुम्हे करना चाहिए। मैं व्यक्तिगत रूप से यह विश्वास नही करता कि ध्यान हमें लक्ष्य तक पहुँचा सकता है, भारत के आध्यात्मिक इतिहास के अनुसार ऐसे लोग हुए हैं जिन्होंने हजारों सालों तक ध्यान किया लेकिन वे लक्ष्य नही पा सके। मैने बाबूजी से पूछा। उन्होंने कहा, 'हाँ तुम सही हो।' मैने कहा, 'तब आप ध्यान, सफाई आदि करने के लिये क्यों कहते हो?' उन्होने कहा, 'आज्ञापालन, लोगों में आज्ञापालन पैदा करने के लिये।"

मात्र २५ सदस्यों की शुरुवात से अब यह केंद्र ४५० अभ्यासियो तक बढ गया है तथा बुधवार का सतसंग ९ जगहों पर होता है। अतिरिक्त सुविधाँए जैसे की डोरमिटरी, अभ्यासियों के लिये आवासीय छात्रावास तथा गुरुदेव का दफ्तर आदि बनाए जा रहे हैं। गुरुदेव ने एक बार कहा की यहाँ पर अभी तक २००० अभ्यासी होने चाहिए थे। ऐसी आशा है कि यह ख्वाब जल्द ही इस केंद्र के अभ्यासियों एवं प्रशिक्षकों के प्रयासों द्वारा पूरा होगा।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org

© 2011 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.